ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-4* July- 2021
Anthology : The Research

राष्ट्रोत्थान में युवाओं की भूमिका–स्वामी विवेकानंद के विचार

Role of Youth in the Upliftment of The Nation - Thoughts of Swami Vivekananda

Paper Submission: 10/07/2021, Date of Acceptance: 23/07/2021, Date of Publication: 24/07/2021

मिथिलेश सिंह
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति शास्त्र विभाग,
के0के0पी0जी0कॉलेज,
इटावा, उत्तर प्रदेश, भारत

भारत एक विकासशील और बड़ी जनसंख्या वाला देश है। यहां लगभग आधी जनसंख्या 35 वर्ष से कम है। युवा शक्ति देश और समाज की रीढ़ है। युवा विश्व के समक्ष देश और समाज के जीवन मूल्यों के प्रतीक होते हैं ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक है कि आज युवाओं के समक्ष ऐसे आदेशों को प्रतिस्थापित किया जाए जो उनके व्यक्तित्व को गहन ऊर्जा और उच्च महत्वाकांक्षाओं से भर दे। स्वामी विवेकानंद एक ऐसा ही व्यक्तित्व है जिनके माध्यम से आज युवा भारतीय इतिहास में व्यक्तिगत जीवन धाराओं को गहराई से देख समझकर उज्जवल भविष्य के सेतु बन सकते हैं।

India is a developing and large population country. Almost half of the population here is below 35 years of age. Youth power is the backbone of the country and society. Youth are the symbols of the life values of the country and society before the world, in such a situation it is very necessary that such orders should be replaced in front of the youth today which fill their personality with deep energy and high ambitions. Swami Vivekananda is one such personality through whom today youth can become bridges of bright future by looking deeply into the personal life currents in Indian history.

मुख्य शब्द : स्वामी विवेकानंद, अध्यात्मवादी, सृजनात्मक, निर्द्वंद्व, सामाजिक पुनरुत्थान ।
Swami Vivekananda, Spiritualist, Creative, Nirvaal, Social Resurgence.

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद एक अध्यात्मवादी और महान सृजनात्मक विभूति थे। भारत के नैतिक तथा सामाजिक पुनरुत्थान के लिए उन्होंने एक दृढ़ प्रतिज्ञ कार्यकर्ता के रूप में अपना संपूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया तभी आज विश्व उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जानता है जिसकी बुद्धि के समक्ष ऋग्वेद से लेकर कालिदास तक , काण्ट से लेकर स्पेंसर तक प्रत्येक वस्तु स्पष्ट एवं स्वयं प्रकाशित थी। जिस समय भारतीय समाज सुधारक यह मान रहे थे कि इंग्लैंड का भारत में विशेष ध्येय है उस वक्त विवेकानंद ने उस मत कर समर्थन किया जिसका मानना था कि भारत के पास पश्चिम के लिए एक विशिष्ट संदेश है ।

स्वामी जी को नव युवकों की शक्ति और क्षमता पर बहुत विश्वास था। मद्रास (चेन्नई) के विक्टोरिया हॉल में बोलते हुए स्वामी जी ने कहा था –

" मेरे मित्रों! मेरा विचार है कि मैं भारत में कुछ ऐसे शिक्षालय स्थापित करूं जहां हमारे नवयुवक अपने शास्त्रों के ज्ञान में शिक्षित होकर भारत तथा भारत के बाहर धर्म का प्रचार कर सकें। मनुष्य , केवल मनुष्य भर चाहिए। बाकी सब कुछ अपने आप हो जाएगा आवश्यकता है ऐसे वीर, तेजस्वी , श्रद्धासंपन्न और दृढ़ विश्वासी निष्कपट युवकों की । ऐसे 100 मिल जाए तो संसार का कायाकल्प हो जाए। "

वे सर्वदा यह चाहते थे कि विदेशियों की आलोचना और आक्रमणों से समस्त हिंदू जाति का संगठन टूटने न पाए। उन्होंने उत्प्रेरित शब्दों में भारतीय युवाओं को ललकारा–

" हे वीर! निर्भीक बनो , साहस धारण करो और गर्व के साथ घोषणा करो 'मैं भारतीय हूं और प्रत्येक भारतीय मेरा भाई हैश उच्च स्वर में यह घोषणा

करो श्भारतीय मेरे भाई हैं , भारतीय मेरा जीवन है , भारतीय समाज मेरे बाल्यकाल का पालना है, भारत की भूमि मेरा परम स्वर्ग है , भारत का कल्याण मेरा कल्याण है ।"

स्वामी जी समस्त भारतीय युवाओं के हृदय में देशभक्ति का संचार कर देना चाहते थे उनका मानना था कि देशभक्ति का संचार हमारे ह्रदय से स्वार्थ को निकाल फेंकता है। राष्ट्र व्यक्तियों से बनता है इसलिए विवेकानंद का अनुरोध था कि सब व्यक्तियों को अपने में मानव गरिमा , सम्मान की भावना आदि श्रेष्ठ गुणों का विकास करना चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति अपने अहम् का देश और राष्ट्र की आत्मा के साथ तादात्म्य कर दें। राष्ट्र और समाज के उत्थान को अपने जीवन का कार्य समझें और यह कार्य विशुद्ध भावना और इच्छाशक्ति के साथ किया जाए क्योंकि निस्वार्थ भावना के बिना सामाजिक उत्थान एकता की बात करना कोरी बकवास है। वे कहते थे –

"जब मनुष्य दूसरों के प्रति भलाई करना बंद कर देता है तब उसकी आध्यात्मिक मृत्यु हो जाती है।श्श मनुष्य के निष्काम कर्म ही उसे आसक्ति से दूर रख प्रकृति और मानवता के हितार्थ अंत तक प्रेरित करते रहते हैं गीता में निष्काम भाव को यों भी स्पष्ट किया गया है –

''ज्ञेय: स नित्य सन्यासी यो न द्वेष्टि न काङक्षति
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखम् बन्धात्प्रमुच्यते''

कर्मों से निर्द्वंद्व छूटकर ही मनुष्य बाहरी गतिरोधों का सामना कर सकता है। मनुष्य का चरित्र भी बाधाओं के प्रतिरोध से ही विकसित होता है। विवेकानंद का कहना था –

"यदि बनाना हो तो चरित्र बनाओश्श क्योंकि श्श्यह चरित्र ही है जो विपत्तियों की अभेद्य दीवारों में से भी मार्ग बना लेता है"

चरित्र बल के द्वारा कई बड़े संकटों का कुशलतापूर्वक सामना किया जा सकता है। एक सैद्धांतिक तथा शिक्षक के रूप में स्वामी जी ने देश को निर्भयता और शक्ति के दो महान आदर्श प्रदान किए। उनकी मुख्य विरासत यह है कि उन्होंने धर्म और जीवन का समन्वय किया। उनका उद्देश्य भारतीय युवाओं में अपार बल और शक्ति की शिक्षा प्रसारित करना था, जिसके लिए उन्होंने वेद–वेदांतों की शिक्षा का सहारा लिया , गीता के संदेश जो कि शक्ति और पुरुषत्व का संदेश है, उसे महत्व दिया । जिस प्रकार भारतीय दर्शन मनुष्य से श्इस संसार में कर व्रत रहकर सौ वर्ष जीने की इच्छा रखनेश की बात कहता है। उसी प्रकार उन्होंने भारतीय युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा –

" तुम चलना जारी रखो । तुम्हारे कदम इतने कोमल हो कि उन से सड़क के किनारे पड़ी हुई धूल का शांतिमय विश्राम भंग ना हो । किंतु वे आनंदमय और वीरतापूर्ण तथा स्वतंत्र हों ।

. . .और कदमों को यह दृढ़ता ,चरित्र को यह बल प्राप्त होता है सत्य धारण करने से। क्योंकि सत्य दिव्य शक्ति है ,मानव की आत्मा है। जिस ह्रदय में सत्य है उसमें स्वयं ही निर्भीकता का वास हो जाता है। विवेकानंद ने युवाओं को संदेश दिया कि–

"सत्य हजार ढंग से कहा जा सकता है फिर भी हर ढंग सच ही रहेगा, सत्य के लिए सब कुछ त्यागा जा सकता है पर सत्य को किसी भी चीज के लिए नहीं छोड़ा जा सकताय उसकी बलि नहीं दी जा सकती।"

सत्य हमें जीवन देता है , उसकी ओर बढ़ने के अतिरिक्त और किसी बात से हम शक्तिशाली नहीं बन सकते। मानसिक, आध्यात्मिक, चारित्रिक रूप से बलवान बनने की पहली शर्त सत्य को प्राप्त करना है । लक्ष्य प्राप्ति का साहस तो इसके बाद की अवस्था है। सत्य से साहस और कर्मशक्ति प्राप्त कर मनुष्य अपने लक्ष्य की ओर निर्बाध रूप से बढ़ सकता है। स्वामी जी ने युवाओं को संदेश दिया कि –

"लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो , हर समय उसी का चिंतन करो, उसी के स्वप्न देखो। उसी के सहारे जीवित रहो जो । अपने लक्ष्य के प्रति पागल हो गया उसे ही प्रकाश के दर्शन होते हैं।"

अध्ययन का उद्देश्य

भारत एक बड़ी जनसंख्या वाला देश है जहां की लगभग आधी आबादी युवा है और युवा शक्ति देश और समाज की रीढ़ है।ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक है कि आज युवाओं के समक्ष ऐसे आदर्शों को प्रतिस्थापित किया जाए जो उनके व्यक्तित्व को गहन ऊर्जा और उच्च महत्वाकांक्षाओं से भर दे। स्वामी विवेकानंद एक ऐसा ही व्यक्तित्व है जिनके माध्यम से आज युवा भारतीय इतिहास में व्यक्त विविध जीवन धाराओं को गहराई से देख समझकर उज्जवल भविष्य के सेतु बन सकते हैं।

वर्तमान समय में युवा पीढ़ी जिस तरह से लक्ष्यहीनता की स्थिति से जूझ रही है ऐसे में स्वामी जी के विचार उन्हें जीवन उत्थान हेतु प्रेरित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में युवा पीढ़ी जिस तरह से लक्ष्यहीनता की स्थिति से जूझ रही है ऐसे में स्वामी जी के विचार उन्हें जीवन उत्थान हेतु प्रेरित कर सकते हैं। स्वामी जी ने लिखा है कि –

"जीवन में निराशा से बड़ा कोई अभिशाप नहीं है।" निराश व्यक्ति के जीवन का विस्तार समाप्त होने लगता है। उन्होंने कहा कि –

"जीवन का पहला स्पष्ट लक्षण है– विस्तार। यदि जीवित रहना चाहते हो तो तुम्हें फैलना ही होगा। जिस क्षण तुम जीवन का विस्तार बंद कर दोगे उसी क्षण जान लेना कि तुम्हें मृत्यु ने घेर लिया है और विपत्तियों तुम्हारे सामने हैं। आशा और आत्मविश्वास ही तो ऐसी दो ऊर्जाएं हैं जो हमारी शक्तियों को जाग्रत करती हैं और हमारी क्षमताओं को दोगुना –तीन गुना बढ़ा देती हैं। आशा भले ही निर्बलता से जन्म लेती हो किंतु उसके गर्भ से ही शक्ति का जन्म होता है। वे चाहते थे कि भारतीय युवा अपने कर्तव्यों और दायित्वों के पालन में ईमानदार हो। क्योंकि मानव मात्र का गौरव उसके अपने अधिकारों के आग्रह में उतना नहीं है, जितना कि उसके अपने

कर्तव्यों के पालन में है। उसकी गरिमा इस बात में है कि वह सार्वभौमिक शुभ की सिद्धि के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दे। विवेकानंद न्याय और स्वतंत्रता के पोषक थे।

न्यायपूर्ण, नैतिक और स्वतंत्र जीवन जीने को उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार माना। उनका मानना था कि बुद्धिमत्ता के बिना न्याय भी संभव नहीं है और जहाँ के वातावरण में स्वतंत्रता के लिए खतरा उपस्थित हो, जहाँ न्याय को चुनौती दी जा रही हो वहां हम तटस्थ भी नहीं रह सकते। इसलिये वे युवाओं को वीरता का संदेश देते हैं कि वे सबसे पहले अपने दोषों को ढूंढ निकालें। निर्भीकता और निश्चयात्मक वृत्ति को धारण करें तभी आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जो राष्ट्रोत्थान के लिए परमावश्यक तत्त्व है क्योंकि बिना अपने पर विश्वास किये हम ईश्वर में विश्वास नहीं कर सकते। स्वामी जी का स्पष्ट मत था कि जो अपने–आप पर विश्वास नहीं कर सकता ,वह नास्तिक है । विश्वास का अभाव अज्ञानता की उपस्थिति का द्योतक है अतः विश्वास में विश्वास करो। विश्वास में विश्वास, अपने–आप में विश्वास, ईश्वर में विश्वास – यही महानता का रहस्य है ।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरण्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरित्यया दुर्गं पथस्तत्कव्यो वदनति।
– कठोपनिषद , 1.3.14 ।

संदर्भ ग्रंथ–

1. *कर्मयोग , स्वामी विवेकानंद*
2. *ज्ञानयोग– स्वामी विवेकानंद*
3. *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन – डॉ. बीएल फड़िया*
4. *(आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन – डॉ. वी पी वर्मा*
5. *मानक सूक्ति कोश – डॉ. पृथ्वीनाथ पांडेय*
6. *सकारात्मक सोच स्वामी विवेकानंद दृ रमेश पोखरियाल*
7. *विवेकानंद की कथाएं – उमेश कुमार৬*